Date: / /

जूट (JUTE)

प्राचीन काल से जूट की खेती भारत एवं बांग्लादेश में होती आ रही है। बांग्लादेश से प्राप्त जूट उत्तम श्रेणी एवं उच्च कोटी का होता है। जूट उत्पादन में बांग्लादेश प्रथम स्थान है। विश्व में 85% तक जूट की आपूर्ति बांग्लादेश करता है।

जूट का पौधा →

जूट भी सन के समान ही प्राप्त किया जाता है। जूट का पौधा लगभग $2\frac{1}{2}$-3 मीटर की ऊँचाई तक पढ़ता है। तथा फूल के सुरझोन पर इनको एकत्र कर लिया जाता है। जूट के रेशे पीले रंग के होते हैं। व इनमें एक विशेष प्रकार की चमक होती है। इसके रेशे मजबूत नहीं होते हैं। जिसके कारण इसका उपयोग वस्त्र निर्माण में नहीं होता है। परन्तु इससे अनेक उपयोगी चीजें जैसे - बोरे गाँठें बाँधने हेतु रस्सियाँ टाट सस्ते दामों की चटाइयाँ बरलेप आदि बनाये जाते हैं।

जूट का उत्पादन →

1- जूट की खेती →

जूट की खेती उष्ण एवं नम वातावरण में होती है। इसके लिए पानी की आवश्यक होती है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

2- जूट का पौधा →

जूट का पौधा वार्षिक होता हैं। इसके पौधा की लम्बाई 6-12 फीट तक होती हैं। सम्पूर्ण पौधे में केवल एक ही तना होती हैं। इसकी मोटाई अँगुली के समान होती है। इसमें फूल आते हैं। फूलों को मुरझाने के पश्चात इसे जड़सहित उखाड़ दिया जाता हैं।

3→ गलाना → (Retting) जूट के पौधो से रेशों को निकालने की सबसे सरल विधि यह है कि पौधे के तनों को किसी तलाव या झरने में तब तक डुबा दिया जाता हैं। जब तक कि वह सड़कर जीवाणुओं द्वारा ऊतकों को नष्ट नहीं कर देते जिनसे कि रेशे एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। इस कार्य में अत्यन्त सावधानी की आवश्यकता होती हैं।

4- नर्म करना → (Softening) स्वभावतया जूट बहुत कड़ा होता हैं। क्योंकि इसमें मोम की मात्रा बहुत कम अंश में पाया जाता हैं। इस कारण रेशो को नर्म किया जाता हैं। जिससे रेशों का विभाजन करना

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

सम्भव हो सके। इसको चिकना भी किया जाता है। रेशों में तेल तथा पानी का मिश्रण लगातार उनकी कई रोलरों के मध्य से तब निकाला जाता है। जब तक की उनमें वांछित परिवर्तन उत्पन्न नहीं हो जाता है।

5- जूट की कताई → (Spinning)

जितने भी सेल्युलोज रेशे हैं। उसमे जूट सबसे कम मजबूत सिद्ध हुआ है। विशेषकर जबकि वह सूखी हुई अवस्था में होती है। अतः जूट की कताई मोटे धागे के रूप में ही सम्भव है।

6- परिष्कृति → (Finishing) जूट पर रासायनिक विरंजन का हानिकारक प्रभाव पड़ता है। अतः जूट कभी सफेद रंग में उपलब्ध नहीं हो सकता है। सबसे अच्छे प्रकार का जूट का रेशा स्वच्छ सुनहरे रंग का होता है। तथा उसकी चमक रेशम के समान होती है। यह छूने में भी नर्म तथा चिकना होता है।

जूट के रेशे अधिक ताप एवं नम वातावरण में नष्ट हो जाते हैं। इस पर सूक्ष्मजीवों का भी अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। नमीयुक्त वातावरण में सूक्ष्मजीव इन्हें नष्ट कर डालते हैं।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

जांतव रेशे - ऊन और बाल →

इतिहास → प्राचीन काल में जानवरों की खाल का प्रयोग शरीर ढकने के लिए किया जाता था। खाल प्राप्ति हेतु जानवरों का वध किया जाता था। इसके परिणामस्वरूप पशुओं की कुछ जातियाँ प्रायः लुप्त होती जा रही थीं। कालान्तर में यह प्रयास किया जाने लगा कि पशुओं की खाल से बाल प्राप्त कर लिये जायें।

ऐसे जानवरों का वध नहीं किया जा सकेगा कुछ समय बाद ऐसी विधि की खोज की गई जिससे जानवरों के बालों को जमाकर, बटकर उनसे बुनाई करके वस्त्र बनाये जाने लगे ऊन के वस्त्र बनाने का कार्य सर्वप्रथम इंग्लैण्ड में किया गया। ऊनी वस्त्रों के लिए इंग्लैण्ड विश्वविख्यात है।

ऊन प्राप्ति के साधन →

ऊन की प्राप्ति मुख्यतः भेड़ों से होती है। परन्तु कुछ जानवर ऐसे हैं जिनके बालों से भी ऊन बनाई जाती है। वे हैं ऊँट, खरगोश, हिरण, बकरी, मृग, लोमड़ी आदि

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया